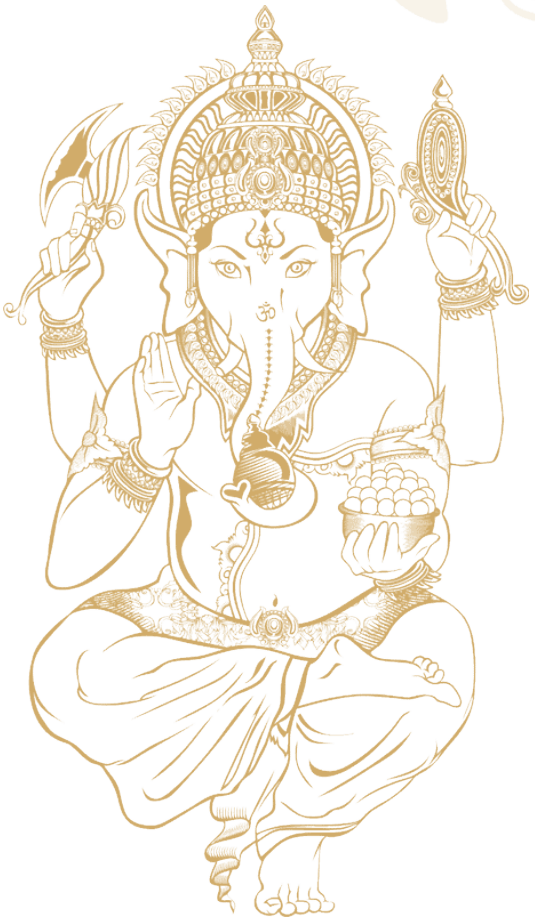

Shivam Jyoti

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121062503

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
28/07/1995	जन्म तिथि	17/08/1998
शुक्रवार	दिन	सोमवार
घंटे 15:29:00	जन्म समय	06:05:00 घंटे
घटी 25:25:38	जन्म समय(घटी)	01:30:08 घटी
India	देश	India
Gorakhpur	स्थान	Gorakhpur
26:45:00 उत्तर	अक्षांश	26:45:00 उत्तर
83:23:00 पूर्व	रेखांश	83:23:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:03:32	स्थानिक संस्कार	00:03:32 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:18:44	सूर्योदय	05:28:56
18:46:45	सूर्यास्त	18:31:43
23:47:53	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:09

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
बुध 12वर्ष 9मा 17दि	23:45:09	वृश्चि	लग्न	सिंह	07:08:15	**मंगल 4वर्ष 2मा 27दि**
शुक्र	11:04:44	कर्क	सूर्य	सिंह	00:05:26	**गुरु**
16/05/2015	19:57:42	कर्क	चंद्र	वृष	28:35:20	**12/11/2020**
16/05/2035	10:23:00	कन्या	मंगल	कर्क	03:43:22	**12/11/2036**
शुक्र 14/09/2018	11:27:10	कर्क	बुध व	कर्क	24:49:49	गुरु 31/12/2022
सूर्य 14/09/2019	11:46:31	वृश्चि व	गुरु व	मीन	02:47:54	शनि 14/07/2025
चन्द्र 15/05/2021	04:35:03	कर्क	शुक्र	कर्क	10:36:25	बुध 20/10/2027
मंगल 15/07/2022	00:33:16	मीन व	शनि व	मेष	09:47:28	केतु 25/09/2028
राहु 15/07/2025	06:42:07	तुला व	राहु व	सिंह	07:39:28	शुक्र 27/05/2031
गुरु 15/03/2028	06:42:07	मेष व	केतु व	कुंभ	07:39:28	सूर्य 14/03/2032
शनि 16/05/2031	04:25:49	मक व	हर्ष व	मक	16:23:23	चन्द्र 14/07/2033
बुध 16/03/2034	00:03:49	मक व	नेप व	मक	06:18:16	मंगल 20/06/2034
केतु 16/05/2035	04:03:11	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	11:27:38	राहु 12/11/2036

लग्न-चलित

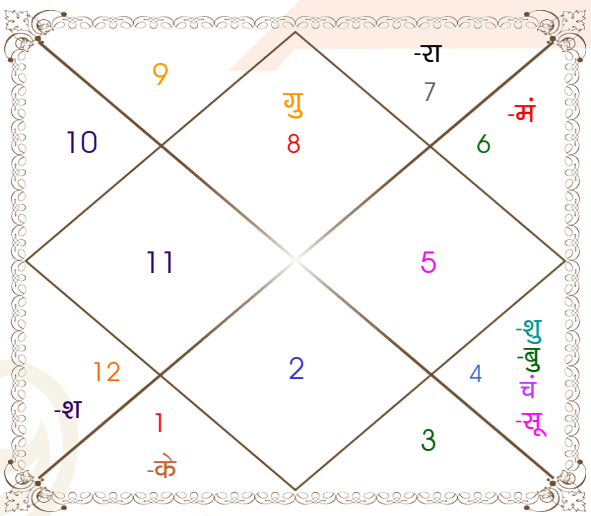

लग्न-चलित

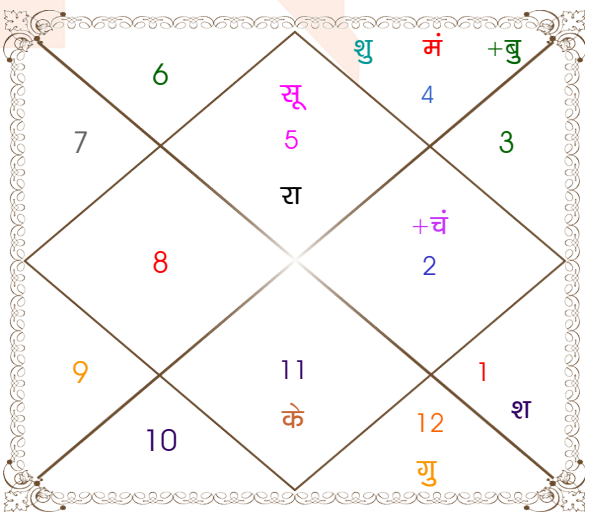

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मार्जार	सर्प	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	चन्द्र	शुक्र	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	कर्क	वृष	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	21.00		

ौपअंउ का वर्ग श्वान है तथा श्रलवजप का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गो में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसारौपअंउ और श्रलवजप का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

ौपअंउ मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

श्रलवजप मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में द्वादश भाव में धनु, मेष तथा कर्क राशि का मंगल स्थित हो तब मंगली दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल श्रलवजप कि कुण्डली में द्वादश भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल श्रलवजप कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु ौपअंउ कि कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल ौपअंउ कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

ौपअंउ तथा श्रलवजप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।